भतीजी का आरोप, 9 साल से अटल को भूले मोदी अमित शाह अस्थियों का कर रहे राजनीतिक व्यापार

सुशील मानव की विशेष रिपोर्ट

दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की भतीजी करुणा शुक्ला ने वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह तथा छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रमन शाह पर अटल बिहारी वाजपेयी की मृत्यु को एक इवेंट में बदलने और उसका राजनीतिक लाभ उठाने का बेहद गंभीर आरोप लगाया है।

करुणा शुक्ला ने अपने ब्यान में कहा है कि पाँच किलोमीटर अटल जी के शव के पीछे चलने वाले प्रधानमंत्री और उनके मंत्री सिर्फ दो कदम अटल जी के बताये रास्ते पर चल लें तो देश बदल जाएगा।

करुणा शुक्ला कहती हैं, 'अटल जी हमारे चाचा थे उनकी मृत्यु देश के साथ साथ हमारी व्यक्तिगत और पारिवारिक क्षति भी है। पिछले 9 वर्षों से अटल बिहारी वाजपेयी को न मोदी जी ने, न अमित शाह ने, न ही रमन सिंह ने कभी याद किया। इस बीच बहुत से राज्यों में चुनाव हुए देश का भी चुनाव हुआ, लेकिन कहीं किसी होर्डिंग बैनर पोस्टर में अटल जी कहीं नहीं दिखे। न ही कभी किसी मंच से उनके किये गए कार्यों का उल्लेख होता था।

पिछले 9 वर्षों से लगातार मैं इस मानसिक पीड़ा से गुजर रही हूँ। जिस छत्तीसगढ़ का निर्माण अटल बिहारी वाजपेयी जी ने किया उस राज्य का मुख्यमंत्री बनने के बाद रमन सिंह अटल जी को भूल गए। पिछले 9 साल में रमन सिंह ने उनके नाम तक का उल्लेख नहीं किया। आज उनके देहावसान के बाद जिस तरह से उनके अस्थि-कलशों को लेकर चुनावी वैतरणी पार करने की रमन सिंह और नरेंद्र मोदी ने जो योजना बनाई है, उससे मैं बहुत क्षुब्ध और दुखी हूँ। ये सब बेहद शर्मनाक है।'

करुणा जी आगे कहती हैं, 'उनके नाम पर ताबड़तोड़ घोषणाए हो रही हैं, ये घोषणाएँ पहले हो सकती थी अगर इनके पास संस्कार होते। अगर इनके मन में अटल जी के प्रति थोड़ा भी सम्मान होता तो निश्चित रूप से ये घोषणाये पहले ही कर सकते थे। भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा उसका चाल चरित्र और चेहरा बिल्कुल बदल गया है।

जिन नरेंद्र मोदी और अमित शाह ने दिल्ली की पूरी कैबिनेट के साथ पाँच किलोमीटर यात्रा की, उनकी शवयात्रा में वो शामिल हुए और पैदल चले, उनसे मैं कहना चाहती हूँ कि अटल के बताये मार्गों पर, उनके आदर्शों पर गर वो दो कदम चल लें तो देश का भला हो जाएगा। अटल जी के नाम पर चुनावी वैतरणी पार करने की जो वो कोशिश कर रहे हैं चारों राज्यों में जनता वो समझ रही है और जनता निश्चित रूप से इसका बदला लेगी।'

'ये सब इनसे सत्ता का लालच करवा रहा है। अटल जी को सच्ची श्रद्धांजली तभी होगी, जब नरेंद्र मोदी और अमित शाह लाल कृष्ण आडवाणी जैसे वयोवृद्ध नेता का अपमान करना छोड़ दें। रमन सिंह अगर सचमुच अटल बिहारी को सच्ची श्रद्धांजली देना चाहते हैं तो वो पिछले 9 सालों में प्रदेश में हुए भ्रष्टाचारों का ईमानदारी से जाँच करवायें'-करुणा शुक्ला ने गंभीरतापूर्वक कहा।

जबकि अटल बिहारी वाजपेयी की मृत्यु के बाद से ही एक के बाद एक ऐसी असंवेदनशील तस्वीरें वायरल हुई हैं, जो प्रधानमंत्री मोदी और उनके मंत्रियों का अटल बिहारी के प्रति निरादर निरादर दर्शाती रही हैं। इसे लेकर जनमानस में मोदी शाह की जोड़ी के अटल-विरोधी होने की धारणा बनी है।

उनके अंतिम संस्कार कार्यक्रम की एक फोटो में मोदी शाह पैर पर पैर चढ़ाए बैठे दिख रहे हैं जैसे वो आंतिम संस्कार में नहीं किसी पार्टी में शामिल होने आये हों। जबकि इसके पहले एम्स के डॉक्टरों के साथ हँसते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की एक फोटो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुई। ये फोटो उस दिन की बताई जाती है जिस दिन अटल जी की मृत्यु हुई। जाहिर है मोदी जब एम्स अटल बिहारी वाजपेयी को देखने गए तो उनकी हालत बेहद क्रिटिकल बताई जा रही थी।

मोदी जी को उस हालात में भी हँसने वाली क्या बात मिल गई, ये तो खैर वही जानें या फिर उस फोटो में दिख रहे वो डॉक्टर और सेक्युरिटी गार्ड। लालकृष्ण आडवाणी के प्रति मोदी और शाह अपमानजनक तस्वीरें भी समय समय पर सोशल मीडिया में आती रही हैं। जाने कितने तो चुटकुले और मुहावरे बनाए जा चुके हैं आडवाणी और मोदी के तल्ख रिश्तों पर।

जिस तरह से अटल बिहारी वाजपेयी की मौत को लेकर सस्पेंस बनाया गया और मीडिया की मदद से लगातार उनके मौत के पहले से ही सहानुभूति की लहर पैदा करने की कोशिश की गई जनमानस में ये बात घर कर गई भीतरखाने में सारे खेल फिक्स है। बीच में एक बार गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने करीब 2.40 पर अटल जी की मौत की घोषणा करते हुए श्रद्धांजलि दी और सारे चैनल एक साथ खबर चलाने लगे उनके मरने की और दो मिनट बाद ही उनके जिंदा होने की बात कहकर न्यूज को बदल दिया गया।

इस बीच मीडिया पूरे देश को उनकी मौत का इंतजार करवाता रहा, उधर तमाम मंत्री अटल आवास और भाजपा मुख्यालय में भव्य आयोजन के प्रबंध में युद्धस्तर पर जुट गए। जाहिर अटल जी की मौत के समय और दिन को लेकर भी जनमानस में संदेह है।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की मौत को एक राजनीतिक इवेंट में तब्दील कर दिया गया। इधर केरल में लाखों लोग डूब रहे उधर मीडिया के सारे चैनल शवयात्रा की लाइव तस्वीर दिखा रहे हैं। कैमरा का फोकस ज्यादातर प्रधानमंत्री मोदी पर रहा।

इधर बिहिया में लोग एक औरत के कपड़े उतार रहे उधर न्यूज चैनलों पर शहर दर शहर की लाइव कलश यात्रा चल रही है। सबकुछ फिक्स। मीडिया ये सब मुफ्त में तो नहीं कर रहा। जाहिर है इन कलश यात्राओं और उनकी लाइव प्रसारण के लिए मोदी सरकार हजारों करोड़ रुपए खर्च कर रही है। कहाँ से आएगा ये पैसा। जाहिर है ये टैक्स के ही पैसे होंगे।

केरल को देने के लिए महज 600 करोड़ और अस्थि कलश यात्रा पर खर्च करने के लिए सैंकड़ों करोड़। जनता सब देख रही है। जिंदा हाथी की अनदेखी करने वाले लोग किस तरह मरी हाथी के अस्थियों तक को बेच बेचकर चुनावी लाभ लेने की जुगत लगा रहे हैं जनता सब समझ रही।

इधर अटल अस्थि कलश यात्रा की कई असंवेदशील तस्वीरें और वीडियो फिर से वायरल हो रही हैं। पार्टी कार्यकर्ता कलशों को इस तरह भावविभोर होकर उठाये दिख रहे हैं जैसे वो अस्थि कलश नहीं किसी चैंपियनशिप की ट्रॉफी हो।

वहीं परसों 22 अगस्त को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की अस्थि कलश यात्रा रायपुर छत्तीसगढ़ पहुँची। जहाँ कलशयात्रा के बाद शोकसभा का आयोजन किया गया। जब अस्थि कलश यात्रा भाजपा कार्यालय एकात्म परिसर पहुँची तो श्रद्धांजली सभा के दौरान मंच पर मौजूद रमन सिंह सरकार के दो मंत्री बृजमोहन अग्रवाल और अजय चंद्राकर जोरदार ठहाके लगाते दिखे।

27 राज्यों के 500 से भी ज्यादा जिलों में अटल बिहारी वाजपेयी की अस्थियाँ यात्रा निकाल कर प्रवाहित की जा रही हैं। लोग इस बात को लेकर भी तार्किक होकर पूछते हैं कि एक आदमी को जलाने के बाद अस्थियाँ बचती ही कितनी हैं जो देश के हर जिले में प्रवाहित की जा रही हैं।

वहीं कुछ धार्मिक लोग इसकी धार्मिकता पर ही सवाल उठाते हुए कहते हैं कि किस हिंदू शास्त्र में लिखा है कि मृतक की अस्थियों को हर नदी नाले में प्रवाहित किया जाए। जाहिर है अटल अस्थि यात्रा के बहाने मोदी सरकार हिंदू धर्म का मजाक उड़ा रही है।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5
2. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
4. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे
5. राम खिलावन बल्लबगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने
6. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास
7. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207

FASHION.IN

Available all types of ladies cotton kurties, Fancy Kurties, Jegin, legin, Fancy Top, T-Shirts, Trousers and imported material in wholesale price.

SPECIALITY IN FANCY TOP & FANCY KURTIES

लेडीज कपड़ों पर भारी छूट
एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

Address : 5M/22, N.I.T. FARIDABAD NEAR DAYANAND WOMEN COLLEGE, ST. JOSEPH CONVENT SCHOOL ROAD . 9911489490

गतांक की चीर-फ़ाड़

डॉ. जुगल किशोर गुप्ता

अटल की मृत्यु को भाजपा ने बनाया एक इवेंट

मज़दूर मोर्चा के 19-25 अगस्त 2018 के अंक में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय व स्थानीय समसामयिक तथा ज्वलंत मुद्दों पर समाचार प्रकाशित हुये हैं। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का लंबी बिमारी के बाद निधन होने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह द्वारा वाजपेयी जी के प्रति श्रद्धांजलि देने के बड़े पैमाने पर कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। परन्तु उनकी बिमारी के दौरान मोदी, शाह तथा भाजपा के किसी अन्य बड़े मंत्री ने वाजपेयी जी के निवास स्थान तथा एम्स में जाकर हाल-चाल पूछने की जहमत नहीं उठाई। एम्स में एडमिट होने के बाद उनकी सेहत के बारे में जानने के लिये सबसे पहले कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी पहुंचे थे, जिसकी खबर फ़ैलते ही भाजपा के खेमे में हलचल मच गई और फ़िर मोदीजी वहां पहुंचे थे।

अब वाजपेयी जी की उदारवादी छवि को भुनाने के लिये मोदी व शाह ने वाजपेयी जी की मौत को एक इवेंट बनाने का खेल शुरू कर दिया, जिसका 'अटल की मौत पर खास रिपोर्ट-अटल क्या 15 अगस्त को ही मर गये थे....अमित शाह एंड कंपनी ने भारत के पूर्व प्रधानमंत्री की मौत को इवेंट में बदला' में कच्चा चिट्ठा खोला गया है। मोदी व शाह ने 22 अगस्त को भाजपा के सभी प्रदेश अध्यक्षों को एक-एक अस्थि कलश सौंपा ताकि वे उसे अपने राज्यों के ताल्लुकों तक ले जायें और वहां श्रद्धांजलि सभा आयोजित करें और अस्थियों को नदियों में प्रवाहित करें। वाजपेयी जी के प्रति मोदी व शाह के व्यवहार पर एक कहावत चरितार्थ होती है कि जिंदा को पानी नहीं देवे और मरे को घी पिलाये व अनाप-शनाप खर्चा करे।

वाजपेयी जी की मृत्यु की आधिकारिक घोषणा तो 16 अगस्त को सायं 5 बजकर 5 मिनट के बाद की गई, परन्तु लोगों को उनकी मौत का अंदेशा पहले ही हो गया था। सोशल मीडिया के अनुसार अटल जी का देहांत तो 15 अगस्त को सुबह पौने दस बजे ही हो गया था, परन्तु मोदी जी के 15 अगस्त के कार्यक्रम के मद्देनज़र इसकी घोषणा टाल दी गई थी। दूरदर्शन ने दोपहर में डेढ बजे तथा इंडिया टीवी न्यूज ने दोपहर ढाई बजे अटल जी के निधन की खबर चला दी थी तथा कई अन्य चैनलों ने भी उनके निधन की खबर फ्लैश कर दी। इसके अतिरिक्त एमसीडी की स्टैंडिंग कमिटी मिटिंग में पूर्व प्रधानमंत्री के निधन पर शोक सभा का आयोजन कर मिटिंग को स्थगित कर दिया, यह मिटिंग तीन बजे से बुलाई गई थी। वाजपेयी जी के निधन पर संदेह का 'अटल की मौत पर खास रिपोर्ट' तथा '15 अगस्त का शो खराब न हो इसलिये घोषणा नहीं की गयी' में पूरा खुलासा किया गया है।

प्रत्येक शासक व राजनेता की सफ़लता व असफलता का सदैव मूल्यांकन किया जाता है। 'आलोचना और समीक्षा से परे कोई नहीं' में पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी की कुछ ऐसी बातों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है जिन पर वाजपेयी जी काबू नहीं कर सके, जैसे सरकारी कंपनियों को बेचने के लिये एक अलग मंत्रालय बनाना और धड़ाघड़ कंपनियां बिकना, संविधान समीक्षा आयोग बनाकर संविधान बदलने की असफ़ल कोशिश करना, गुजरात में गोधरा कांड के बाद भीषण दंगे और 'राजधर्म' न निभा पाना, बाबरी मस्जिद गिरने पर चुप्पी परंतु दुखी आदि। बिहार के मोतीहारी स्थित महात्मा गांधी सेंट्रल यूनिवर्सिटी में समाजशास्त्र के प्रोफ़ेसर संजय कुमार द्वारा फ़ेसकुक पर वाजपेयी जी की आलोचना लिखने पर भाजपा के कट्टरपंथियों ने उस प्रोफ़ेसर की पिटाई कर दी जो कि वाजपेयी जी की उदारवादी सोच के बिल्कुल विपरीत है।

'पानी मांगा जाना बड़ी घटना है, लाल किले पर राष्ट्रगान के दौरान पीएम ने पानी पीया' से स्पष्ट है कि मोदीजी के लिये राष्ट्रगान का कोई महत्व नहीं है। मोदी जी रोज योगाभ्यास करते हैं और 'फ़िट' हैं तो क्या वे 52 सैकेंड अपनी प्यास नहीं रोक सकते थे? राष्ट्रीय झंडा को सलामी देते समय मोदी जी ने अपने हाथ की हथेली को सामने की ओर रखने की बजाये हथेली का रूख ज़मीन की तरफ़ रखा जो राष्ट्रीय ध्वज की सलामी के तौर-तरीके के विपरीत है। इस प्रकार की सलामी आरएसएस की शाखा में उनके ध्वज को दी जाती है। इस प्रकार मोदी जी ने राष्ट्रीय पर्व पर राष्ट्रीय ध्वज तथा राष्ट्रगान का अपमान किया है।

15 अगस्त को मोदी जी ने लाल किले की प्राचीर से भारत की अर्थव्यवस्था को दौड़ता हुआ हाथी तथा देश प्रगति पर अग्रसर बताया। परंतु' 15 अगस्त को मोदी के लाल किले की तकरीर के हिसाब से देश प्रगति पथ पर अग्रसर नज़र आता है लेकिन वास्तविकता क्या है यह आर्थिक जगत की खबरों से समझा जा सकता है' से मोदी जी की आर्थिक दावों की पोल खुल जाती है। रुपये की कीमत डॉलर के मुकाबले में सर्वाधिक निचले स्तर पर पहुंच गई है, व्यापार घाटा तथा चालू खाते का घाटा अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच रहा है, एनपीए बढता जा रहा है तथा यूपीए के मुकाबले में एनडीए यानी मोदी शासन के दौरान जीडीपी कम हुई है।

भारतीय घुसपैठिये मैक्सिको सीमा से अमरीका में प्रवेश करके शरण लेने के लिये मोदी शासन की बदनाम फ़ासीवादी छवि बहाना ले रहे हैं, जिसकी 'खबर (दार) झरोखा-मैक्सिको सीमा पर भारतीय घुसपैठियों को मोदी की बदनाम छवि का सहारा' में उपयुक्त समीक्षा की गई है। लॉस एन्जेल्स टाइम्स की चौंकाने वाली रिपोर्ट के अनुसार दक्षिण केलिफ़ोर्निया की जेल में बंद सेंकड़ों अप्रवासियों में 40 प्रतिशत भारत से आये हुये लोग हैं।

'उमर खालिद पर जानलेवा हमले के लिये भाजपा सरकार जिम्मेदार, मोदी-शाह पर रिहाई मंच ने उठाए सवाल' में रिहाई मंच ने उमर खालिद पर हमले को आतंकी घटना करार देते हुये वाज़िब मांग की है कि इस घटना को अंजाम देने वाली संस्था पर पाबंदी लगाई जाए। गौरतलब है कि जेएनयू के छात्र कन्हैया कुमार पर कथित देशद्रोह के आरोप पर सुनवाई के दौरान अदालत में सबके सामने हमला किया था, परन्तु हमलावरों पर आज तक कोई कार्यवाई नहीं की गई क्योंकि हमलावर संघ परिवार से संबंधित थे।

सावरकर द्वारा 1924 में माफ़ी मांगकर छूटने के बाद ब्रिटिश साम्राज्यवाद का समर्थक बनने पर 'ब्रिटिश भारत माता की जय-सावरकर' कार्टून द्वारा सावरकर की देशभक्ति व हिन्दुत्व पर तथा एक चाय वाले द्वारा गटर की गैस से चाय बनाने का मोदीजी द्वारा गटर-गटर गैस का हवाला देने पर 'जीपैजी (गटर पैट्रोलियम गैस) के आविष्कारक श्री नरेंद्राइंस्टाइन जी की अद्भुत फ़ोटो' कार्टून द्वारा मोदी जी की नीतियों पर उचित कटाक्ष किया गया है।